भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं अक्षररूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 43 अंक : 5 | 07.09.2020 सोमवार (सितंबर - अक्तुबर) | वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

गुरुहरि पप्पाजी के प्राकट्य पर्व पर...

पहली सितंबर – गुरुहरि पप्पाजी का प्राकट्य दिन!

स्वयं गुणातीतभाव में रहते हुए, समूह में समाज को गुणातीतभाव से अवगत कराना प.पू. पप्पाजी के जीवन का हेतु था। उनकी प्रत्येक क्रिया का एक ही उद्देश्य था–महामानव के समाज का सर्जन! उनके प्रेरक जीवन से सूझ मिली कि – **अहंशून्य और प्रभुप्रेरित जिसका वर्तन हो, वही महामानव!** उनके अंतर के व्यक्त या अव्यक्त प्रत्येक विचार-भाव में ऐसे 'जीवनमुक्तों' का समाज रचित करने की ही दृढ़ता थी। चित्तशुद्धि जैसे कठिन कार्य को गुरुहरि पप्पाजी ने अपने सामर्थ्य और संकल्प के बल से गतिमान रखा। इस हेतु अकल्पनीय सहनशक्ति और धीरज से वे तटस्थ रहे। उनका तो एक ही दृष्टिकोण था कि जो भी संबंध में आया, उसकी पात्रता हो या न हो, उसमें उमंग हो या न हो, अभीप्सा हो या न हो, लेकिन वह किसी तरह जोग में आ गया है, वही उसका सौभाग्य है! वाक़ई हम सभी खूब नसीबदार हैं कि ऐसे गुणातीत स्वरूपों ने स्वयं अपना संबंध देकर हमें निहाल कर दिया! समय-समय पर उन्होंने आशीष दी-सूचन किया कि किस प्रकार हम सच्चा सुख, शांति और आनंद प्राप्त कर सकते हैं। तो आइए, वर्षों पहले 1992 में **'गुणातीत ज्योत'** पत्रिका से संकलित **गुरुहरि पप्पाजी** के निम्न आशीर्वाद का मनन-चिंतन करके, उनके श्रीचरणों में प्रार्थना करें–

हे पप्पाजी!

सभी प्रत्यक्ष स्वरूप जिस कक्षा पर हमें ले जाना चाहते हैं, उसके लिए हमारे अंतर की आरत तो है,
लेकिन, कहीं न कहीं हमारा कुछ 'सूक्ष्म' ही आड़े आता है।
आप तो भीत के पार का सब कुछ जानते हैं-देख सकते हैं।
सो, आप ही हमारी प्रार्थना को अपना बल देकर सभी कणियों से मुक्त करा दें...

*"**भगवान** और साधु की महिमा की बातें निरंतर करनी और सुननी। महाराज तो अपना अक्षरधाम, पार्षद और अपना समग्र ऐश्वर्य लेकर पृथ्वी पर पधारे हैं। वे जैसे अक्षरधाम में हैं, वैसे ही यहाँ पृथ्वी लोक में विराजमान हैं। देह छोड़ कर जिन्हें पाना है, वे हमें जीतेजी ही मिले हैं। अक्षरधाम में कुछ भी शेष नहीं रह गया। यह बात यदि नहीं समझेंगे, तो जीव दुर्बल रहेगा। यदि समझ ली, तो जीव में कदापि दुर्बलता नहीं रहेगी और वह अलौकिक हो जायेगा। दरअसल,*

महिमा समझने के अतिरिक्त अन्य कोई बड़ा साधन भी नहीं है। महिमा समझे बिना भले ही कितने साधन करें, परंतु जीव बल प्राप्त नहीं करेगा। महिमा समझने का स्रोत तो भगवदी का प्रसंग है, जो स्वयं माहात्म्ययुक्त जीवन जीता हो। अन्यथा उसके प्रसंग के बिना यथार्थ महिमा समझना असंभव है।''

हमें ***मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी*** *की पहले प्रकरण की यह* ***पहली बात*** *सिद्ध करनी है।*

दरअसल हम आज जिस सभा में बैठे हैं, वह भी अक्षरधाम की है। सो, ऐसा मानना चाहिए कि 'गुणातीत समाज' के सभी सदस्य प्रगति कर रहे चैतन्य हैं। ***किसी का भी अभाव नहीं लेना, कोई खटपट या हीन बातें नहीं करनी। यदि कर सको तो सेवा कर लेना, लेकिन टीका-चर्चा नहीं करना।***

यह सब संभव करने के लिए भगवदी का प्रसंग अनिवार्य है। *सो, ऐसे जो संत, बहन और भाई मिले हैं, उनका समागम करें।* ***जहाँ से भी महिमा की बातें सुनने को मिलें, उनका अनुसरण करें।***

साथ ही साथ, ***'जीवनडोरी'*** *का वचनामृत गढडा मध्य 28*

और

किस प्रकार अभाव की बातों से जीव का पतन होता है, उसका उल्लेख करता ***'मरणडोरी'*** *का वचनामृत मध्य 46 का पठन करके, उसके अनुरूप स्वयं को ढालना चाहिए।*

यदि भगवान व भगवान के भक्तों की सेवा किया करेंगे, किसी का अभाव नहीं लेंगे और अवगुण न ही देखेंगे तथा झंझट - झमेले में नहीं पड़ेंगे, तो जीतेजी अक्षरधाम का सुख प्राप्त होगा।

महाराज को एक यही चीज़ नहीं जँचती कि उनके अल्प संबंध वालों की हम टीका-चर्चा करें। यदि ऐसा करेंगे, तो महाराज हमारी शक्ल भी नहीं देखेंगे। सो, जो अहंकारयुक्त जीवन जीते हैं, वे सभी बीमार हैं। *यदि इस रोग से मुक्त होना है तो–*

1. हमें किसी की तुलना नहीं करनी चाहिए।

2. किसी पर टिप्पणी नहीं करनी चाहिए।

3. किसी का आध्यात्मिक मूल्यांकन नहीं करना चाहिए।

जिसे वाक़ई अध्यात्म के पथ पर चलना है, उसके लिए ये तीन अनिवार्य शर्तें हैं।

दरअसल, हम तो माहात्म्ययुक्त सेवा करके सुखी हुए हैं। ***माहात्म्ययुक्त सेवा आत्मा की औषधि है। खुराक खाने के बाद पुनः अभाव, अवगुण और झंझट - झमेले में यदि पड़ेंगे, तो उस औषधि का असर नहीं होगा। हमें एनीमीक नहीं होना है।*** *हमारी आत्मा दुर्बल न हो जाये, इसलिए स्वामी की पहले प्रकरण की पहली बात का प्रथम वाक्य – 'भगवान और साधु की महिमा की बातें निरंतर करनी और सुननी' – दृढ़ करना। अभाव की बात न तो बोलनी-सुननी और यदि कोई करता हो, तो उसे बोलने भी नहीं देना या उसकी बातें सुनने में दिलचस्पी भी नहीं रखनी।* ***'स्वामी की बात' प्रकरण 4 की 140वीं*** *निम्न* ***बात*** *को जीवन का आदर्श बनाना–*

''भगवान के भक्त का गुणगान करने से जीव ब्रह्मरूप हो जाता है। देखा जाए तो गुण गाने में कोई परिश्रम भी नहीं लगता। लेकिन, फलां ऐसा और फलां वैसा, यूँ भगवान के भक्त का दोष नहीं कहना। उससे क्या मिलने वाला है ? यदि यह बात फिलहाल नहीं समझेंगे, तो भविष्य में समझ आयेगी। कोई जल्दबाज़ी नहीं है, कहाँ भागे जा रहे हैं? परंतु, किसी का दोष नहीं कहना।''

'स्वामी की बात' प्रकरण-9 की 40वीं बात *में* ***'लवा और बादशाह'*** *का दृष्टांत है।*

बादशाह ने लवा से पूछा – तुम्हें मुझसे कितना लगाव है ?

लवा ने तुरंत कहा – अरे ! आप तो मेरे मालिक हैं। आपके प्रति जो लगाव है, उसके विषय में क्या कहूँ?

बादशाह ने कहा – तो, एक बात बताओ ? यदि हम दोनों की दाढ़ी में एक साथ आग लग जाये, तो तुम पहले अपनी दाढ़ी बुझोओगे या मेरी ?

लवा ने सहजता से कहा – पहले दो हाथ तो अपनी दाढ़ी पर मार लूँगा, फिर आपकी बुझाऊँगा।

यूँ, स्वयं के दोष देख कर, उन्हें टालने की ग़रज़ रखते हुए पहले अपनी पूर्णाहुति करवा लेना।

वचनामृत लोया पाँच के अनुसार ***गुरु के समक्ष निष्कपट रहना।***

जिस गुरु से जुड़े हों, उन्हें कल्याणदाता और दिव्य मानना।

निष्कपट होना अर्थात् क्या ?

तो, गुरु के प्रति यदि मनुष्यभाव का विचार उत्पन्न हो, तो उसे तत्काल टाल देना और गद्‌गद् कंठ से प्रार्थना करना – महाराज ! महाराज ! मुझे यह नहीं चाहिए। इसके उपरांत भी यदि न टले, तो गुरु से कह देना।

गुरु को यदि न बतायें और मन में संजोए रखें तो वह कपट कहा जाये।

मान, स्वाद, स्नेह, लोभ और काम – ये हमें स्वधर्म से डिगा देते हैं।

गुरु के प्रति अभाव पैदा करते हैं, यही दोष है।

अतः ***जाग्रतता से जीना चाहिए और निष्कपट होकर आत्मा का आरोग्य संभालना चाहिए।***

***

अहो! हेमंत ऋतु के पर्व – 2020

25 अक्तुबर – दशहरा!

वर्षों से भारतीय सनातन संस्कृति में विजयादशमी की अद्‌भुत महिमा है।

आसुरी शक्ति पर दैवी शक्ति की विजय का यह प्रतीक है। शूरवीरों, योद्धाओं, ध्येयनिष्ठ सैनिकों की कुर्बानी की गाथा सुनाता है और... अध्यात्म मार्ग के पथिकों के अंतर में उत्साह उत्पन्न करता है। जिस प्रकार भगवान श्री रामचंद्रजी ने असुर रावण का नाश किया, उसी प्रकार प्रगट प्रभु ने हमारे इंद्रिय-अंतकरण से उत्पन्न अज्ञान के अंधकार को मिटाने के लिए हमें समर्थ गुरु की गोद दी है। **गुरुवर्य योगीजी महाराज** ने भी तो 'हरि के प्रसाद' रूप **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** को **पार्षदी दीक्षा** देने के लिए यह विशिष्ट दिन चुन कर आश्रितों को निहाल कर दिया।

'प्रभुदास' के रूप में प.पू. स्वामीजी की प.पू. बापा के प्रति ऐसी दासत्वभक्ति थी।

* उनकी आज्ञा के बिना उन्होंने एक कदम भी उठाया नहीं और समग्रभाव से वे उनकी सेवा में जुड़े रहे हैं।
* क्षणभर भी वे उनकी मूर्ति से अलग नहीं रहे हैं।
* अपनी दसों इंद्रियों का व्यवहार केवल उनके हेतु किया है।
* मन-बुद्धि की सीमाएँ उल्लांघ कर उन्होंने अपना समग्र तंत्र उनसे जोड़ा है।
* मन-बुद्धि या इंद्रियों के वे कभी भी दास नहीं बने, बल्कि केवल प्रभु के दास बने रहे; इतना ही नहीं उनके दास का दास बन कर जीये हैं।
* उन्होंने हमेशा शुभ संकल्प ही किया और संपर्क में आये युवकों को प.पू. बापा से जोड़ा।

प.पू. स्वामीजी के श्रीचरणों में प्रार्थना कि आप जैसे स्वरूपों द्वारा किये गये अनुपम परिश्रम को हम व्यर्थ न जाने दें...

जैसे प.पू. बापा की निश्रा में आपकी नज़र उनके प्रति हमेशा रही, वैसे हमारी दृष्टि आपकी ओर ही रहे। वर्तमान में अपनी चेष्टाओं द्वारा आप हमें यही सीख देते हैं...

31 अक्तुबर – शरदपूर्णिमा!

शरदपूर्णिमा यानि **मूल अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामीजी का प्राकट्य दिन!** पृथ्वी पर अवतरित होने का उनका एक ही हेतु था – चैतन्यों को चिरंजीव शांति देना... मायिकभाव से परे करके ब्रह्मभाव से भरना।

शरीर के लिए जितनी प्राणवायु की आवश्यकता है, ऐसे ही भक्तों के लिए प्रभु का स्मरण, भजन, भक्ति और संत समागम की ज़रूरत है! भोजन के बिना व्यक्ति जीवित रह सकता है, लेकिन श्वास के बिना क्षणभर जीवित रहना नामुमकिन है। इसलिए **'स्वामी की बात'** – प्रकरण 1 की 126, 216, प्र. 2 की 39, 44, प्र. 5 की 133, 259, 357, प्र. 6 की 126, 144, 243, 247, 283, प्र. 9 की 117, प्र. 11 की 82, प्र. 13 की 38, प्र. 14 की 7, 164, 223 – में **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** ने निम्न प्रकार से केवल और केवल भगवान का **'भजन और संत समागम'** को अहमियत दी है–

- *दाल-रोटी खाओ और प्रभु का भजन करो। अन्य कुछ करने जैसा नहीं है। भोजन तो प्रभु देने वाले ही हैं...*
- *साधु का समागम ही सर्वोत्तम है। चाहे मंदिर का प्रसाद खाकर भी साधु का समागम कर लो...*
- *काल, कर्म, माया तो जड़ हैं। कर्ता-हर्ता भगवान को मानना और दाल-रोटी खाकर भजन करना...*
- *यदि कोई भगवान का भजन करे, तो प्रभु बिना कोई परिश्रम किये उसे भोजन देंगे और उसके परिवारजनों के लिए अन्न-वस्त्र की पूर्ति करेंगे...*
- *हमें तो बस माला जपनी चाहिए। दाल-रोटी तो प्रभु दे ही देंगे। कितनों को दिया है और देते रहते हैं...*
- *साधु को साधारण मनुष्य या देवता जैसा नहीं मानना। वे तो बहुत बड़े हैं। अतः उनका समागम कर ही लेना... मंदिर की दाल-रोटी खाकर भी यह जोग कर लेना...*
- *दाल-रोटी खाकर भी प्रभु का भजन कर लेना...*
- *दाल-रोटी खाकर सिर्फ प्रभु का भजन करने में ही माल है...*
- *निरंतर मंदिर का प्रसाद खाकर भी ये बातें सुनने जैसी हैं...*
- *अपनी बनाई रोटी या मंदिर की रोटी खाकर भी ये बातें सुननी और अज्ञान टालना...*
- *मंदिर का प्रसाद खाकर यदि रोज़मर्रा भक्ति करोगे, तो निर्बंध हो जाओगे...*
- *मंदिर की दाल-रोटी खाकर इस साधु का समागम जो करेगा, उसमें कोई कसर नहीं रहेगी...*
- *केवल दाल-रोटी के लिए कारोबार करना, बाकि मुख्य तो भगवान ही भजना...*
- *महाराज ने कहा है कि यदि कोई समागम करने के लिए मंदिर में रहता है, तो उसे हम खाना खिलायेंगे...*
- *घर में भले लाख रुपये हों, लेकिन रोटी तो एक ही खानी है। जो जोग किसी को नहीं मिला, वह आज हमें मिला है...*
- *जो भगवान भजेगा, उसे खाना क्यों नहीं मिलेगा? लेकिन जीव को विश्वास नहीं होता... जो कमाता नहीं है, उसे भी खाने को मिलता है। सो, भगवान पर विश्वास रखना...*

उपरोक्त बातों से ख्याल पड़ता है कि मूल अक्षमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी को कितनी ग़रज़ होगी कि जीव किसी भी तरह जीतेजी सुखी हो जाये और मनुष्य जीवन का सही महत्त्व समझे। हम सभी अत्यंत भाग्यशाली हैं कि हमारे दोष, स्वभाव, प्रकृति, प्रारब्ध कुछ भी गिने बिना, गुणातीत परंपरा को जीवंत रख कर स्वामी ने हम पर बहुत अनुग्रह करके सदा सनाथ किया है। उनके जोग में हम आये वही पात्रता मान कर, अपना सर्वस्व हम पर लुटाया है।

इसीलिए **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने **शरदपूर्णिमा** का विशिष्ट दिन पसंद करके, अंतर की प्रसन्नता के पात्र **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** को **'भागवती दीक्षा'** प्रदान की। प.पू. बापा जैसी अलमस्त-दिव्य विभूति ने चेतना को परख लिया था कि इनमें अखंड निवास करके, इनके द्वारा मैं अनंत मुक्तों - जीवों को प्रभुभक्ति के रंग में सराबोर करके, सर्वोपरि उपासना का महत्त्व व्यापक कर सकूँगा।

इसी प्रकार, **प.पू. गुरुजी** के कहे अनुसार – **जिनके द्वारा गुरुहरि काकाजी के प्राण आज भी धबक रहे हैं...** और **जो विदेश में बसते मुक्तों की लाइफ लाइन बने हैं,** ऐसे **प.पू. दिनकर अंकल** का प्राकट्य भी **शरदपूर्णिमा** के दिन होना उनके अनादि के होने का सबूत है। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी जैसी ही दासत्वभक्ति का उनमें सहज दर्शन होता है। अपने गुण, महत्ता, बड़प्पन, सामर्थ्य, प्रतिष्ठा, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान जैसी अनेक विशिष्टताओं को ढक कर, संबध वाले छोटे से छोटे मुक्त की प्रभु के- काकाजी के भाव से सेवा करने हेतु ही मानो उन्होंने देह धारण की है। सहज विनम्रता और रंकभाव ही उनकी जीवनशैली है। **'काका कॉन्सशियसनेस' में इस कदर जीते हैं कि जहाँ भी जाते हैं, वहाँ सकारात्मकता उत्पन्न हो जाती है।**

सो, शरदपूर्णिमा के ऐसे मंगलकारी पर्वों पर **अंतर से प्रार्थना** –

हे महाराज! हे स्वामी! हे प्रत्यक्ष स्वरूपों! आपका **जोग तो हमें बिना किसी परिश्रम या शोध के हो गया!** लेकिन, जन्मों से चिपके प्रारब्ध व प्रकृति हमें आपके बेजोड़ प्रेम का एहसास होने नहीं देते।

सो, **बस प्रत्येक संजोगों में आपसे चिपके - जुड़े रहें**

और... हृदय में शाश्वत् सुख की अनुभूति करने हेतु **दीवाली एवं नूतन वर्ष** निमित्त **गुरुहरि काकाजी** के निम्न आशीर्वाद झेल कर स्वयं को कृतार्थ करें...

आज *के परम मंगलकारी दिन पिछले वर्ष का सारा हिसाब चुका कर, नये वर्ष के मंगलाचरण पूजा का नया पृष्ठ शुरु करें और सभी क्रियाओं का आरंभ –*

'होकर बिलकुल निराधार, जाके मन से पार, करें तुझको पुकार, तो तू सुन ले तत्काल -2,
बालक मात्र बने रहें, मरज़ी में तेरी वर्ता करें, दिल में तेरे बस जाएँ रे...'

इस भावना से करें।

प्रभु की सार्वभौम सत्ता के अस्तित्व का संपूर्ण स्वीकार करके उपरोक्त रीति से खुले दिल की भावना से पुकार करें। प्रत्यक्ष गुणातीत संतरूपी 'चैतन्य माँ' हमें ग्रहण करके गोद में ले लेगी। हमारी प्रार्थना - आरज़ू को तत्काल सुन कर, हमारे परम हित में जो होगा वैसा करेंगे।

तो आओ, आओ... हम सभी प्रभु का दिव्य पूजन करके, उमंग एवं उत्साह से नये वर्ष की शुरुआत करें। हृदयाकाश में प्रभु के प्रगटीकरण की चटपटी से - छटपटाहट से अतर्दृष्टि एवं प्रायश्चित्तरूप प्रार्थना करके प्रवेश करें। सत्संगी या साधक की जैसी अचल मति होगी, वैसा ही उसके जीवन में वह उर्ध्वगमन करेगा और गतिस्थिरता आयेगी।

- *अक्षरधाम के सनातन शाश्वत् सुख, शांति और आनंद का यह चतुर्व्यूह जीवनमुक्तदशा के रूप में - जीतेजी ही जीवमुक्तदशा के रूप में शुरु होता है।*
- *अंतःकरण की माद्रीक - विशैली गति पूर्णतः बंद होने पर चैतन्यप्रकृति का देह 'भागवती तनु' के रूप में बंधता है।*
- *भगवान का दिव्य विग्रह साकार स्वरूप एवं दिव्य साकार मुक्तों – धाम, धामी, मुक्तों के प्रत्यक्षभाव का हमारी चेतना में अचल मति से संपूर्ण स्वीकार होने पर,*
  जीव ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म के अपरिमित

सुख, शांति, बल और आनंद का अनुभव करता है, भोगता है और अखंड प्राप्त करता है।
जीतेजी ही ऐसी परम मंगलकारी अवस्था सरलता से प्राप्त करवाने हेतु
गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य योगीजी महाराज ने केवल प्रेम और करुणा से ही
अथक् परिश्रम करके, हमारे लिए सुगम और सर्वोत्तम रीत-करामत बताई
और सभी के लिए ज़ाहिर में खुली भी कर दी है।
उसका ब्रह्मसूत्र-महासूत्र उन्होंने स्वयं दिव्य जीवन जीकर संप, सुहृद्भाव और एकता के सिद्धांत से
या
भगवान के स्वरुप में अखंड वृत्ति के रूप में निर्दोषबुद्धि की भावना द्वारा बता दिया।
आत्यंतिक ज्ञान, कल्याण या मुक्ति का यह राजमार्ग 'यावच्चंद्र दीवाकरौ' मानवजाति के लिए
और
विशेषतः तो गुणातीतज्ञान के रहस्य को जानने वालों के लिए बिलकुल सरल और आसान बनाया है।
तो, आओ - आओ, हम सभी इकट्ठे होकर, मिलजुल कर ऐसा दिव्य जीवन जीएँ, उसका आनंद लें और अन्य को भी बाँटें।
*लेकिन, इस हेतु मन की या अहम् की पीली छींट * न रह जाए,*
इसकी अखंड जाग्रतता रखनी या सावधानी बरतनी पड़ती है;
ताकि स्वरुपज्ञान को क्रियान्वित करने पर हठ, मान, ईर्ष्या आ न जाए, वृत्ति के वेग में खींचे न जाएँ
और स्वधर्म चूक कर किसी भी प्रकार से सुहृद्भाव खंडित न करें।
यदि ऐसा होता है, तो यह कसर वासना या दोष की नहीं,
बल्कि भगवान और प्रत्यक्ष संत को वे जैसे हैं, वैसा उन्हें तत्त्व से पहचानने की कसर है।
क्रियायोगों में संबंध वाले मुक्तों के प्रति भावफेर आ जाता है।
माहात्म्य की ऐसी कमी या कसर जल्दी दूर करने के लिये –
खटका रखें
या
डाँटने-टोकने वाले का केवल गुण ही लें
या
किसी बड़े संत या सत्पुरुष जो भी प्रायश्चित् दें, वचन कहें, आज्ञा दें, उसका प्रेम से स्वीकार करें
या
मनन द्वारा समझदारी से ब्रह्म का संग करें
या
प्रभु व संत के केवल गुणगान ही गाया करें
या
रंकभाव और अहोहोभाव से भक्तों की सेवा ही किया करें
या

---

* हीरे में यदि पीली छींट हो, तो उसका मूल्य कम हो जाता है...

प्रतिदिन नियमित रुप से दो बार बड़े पुरुष की आज्ञा से स्वरूपउपशम करें

या

प्रत्यक्ष स्वरुप के अभिप्राय के मुताबिक पराभक्ति करें

या

समर्पितभाव से संत के आश्रय में रहते हुए पुकार किया करें।

*जिसका जैसा अंग, रुचि या भावना हो, उसके अनुसार राजा परिक्षित जैसी मोक्ष की उत्कंठा रख कर, लगन लगा दें। सर्वोत्तम परिणाम अवश्य आयेगा ही। गुणातीत पुरुषों का ऐसा वरदान है। 'स्वामी की बातों' में तो यहाँ तक स्पष्ट कहा है – **'कोटि जन्म की कसर आज (तत्काल) टल जायेगी और जीव ब्रह्मरुप हो जायेगा।'***

सद्गुरु कृपा से हमें यह विरासत बख़्शिश में मिली है। सुहृद्भाव और निर्दोषबुद्धि की केवल हिफ़ाज़त करके ऐसा परमानंद प्राप्त करके सहजावस्था में जल्दी ही जीते हो जायें, ऐसा दृढ़ संकल्प जीव में करके, आज से ही ऐसा जीवन जीना शुरु करें।

अब इतना ही विचार करना है कि क्या हमें सच में ऐसा सुख और आनंद चाहिए ? ज़रा ठहरो और सोचो, सच में क्या चाहिए ? यदि यही चाहिए, तो अक्षरधाम में जैसे धाम, धामी और मुक्त-दिव्य विग्रह अखंडित है, वैसे के वैसे ही पृथ्वी पर भी वे – मानवदेह में प्रगट है। ऐसी आस्तिकभाव वाली अचल मति या सम्यक् प्रतीति हमें होगी, तब ही दिव्यता अखंड रहेगी। भगवान, संत और भगवदी जैसे हैं, वैसे तत्त्व से पहचान कर जीतेजी ही परम सुखी हो पाएँगे।

यह मार्ग शूरवीरों का है; लेकिन जो शूरवीर नहीं हैं, वे अफसोस न करें।

*उनके लिये सरलता का अन्य आसान उपाय अति बड़े संत की कृपा और प्रसन्नता प्राप्त कर लेना है। भले और कुछ न कर पायें, लेकिन दिल की सच्चाई से, प्रमाणिकता से इतना तो हम सभी अवश्य करें। वह क्या ? तो, 'जब से जगे तब से सवेरा' – जानकर **'सत्संग' को अनन्यभाव से 'आत्मबुद्धि और प्रीति' वाला अपना एक कुटुंब मानना शुरु कर दें। इस हेतु 'दो अच्छे साधु और दो अच्छे हरिभक्त के साथ जी जोड़ कर मैत्रीभाव दृढ़ करें।'***

फलस्वरुप –

- *एक अमाप शक्ति उत्पन्न होगी। कैसे भी विपरीत प्रसंग या परिस्थिति में आध्यात्मिक समता रहते हुए पल-पल स्थितप्रज्ञ रह पायेंगे।*
- *ब्राह्मीस्थिति का अपरिमित आनंद प्राप्त होगा।*
- *देह, इंद्रियों, अंतःकरण, जीव, जीवनमुक्त, ब्रह्म या परब्रह्म – इनका आनंद जीवन के विविध पहलूओं में सम्यक् प्रकार से ले पायेंगे, भोग पायेंगे और प्राप्त कर सकेंगे।*

*अति बड़े पुरुषों को तो यही करवाने की **लगन** है, लेकिन मन को तो करोड़ों वर्षों का राज-इच्छा, क्रिया और अपेक्षा छोड़ कर, यह न होने देने की **महालगन** है।*

*अतः **प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादजी, प.पू. अक्षरविहारीजी, पू.साहेब, पू. बा, पू. बेन जैसे दिव्य साकार स्वरूपों का बल लेकर, स्वयं ही सीधी छलाँग लगा कर, मन और अहम् के पुराने-पुरातन जर्जित राज्य को बिलकुल मिटा दें।***

आओ, आओ... हम सभी उन्हें संपूर्ण सहकार देकर सहभागी बनें।

महाराज, स्वामी और संत इस हेतु सूझ तत्काल दें यही सद्गुरु चरणों में प्रार्थना।

(गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज, विक्रम संवत 2034)

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 1.9.'20, मंगलवार – गुरुहरि पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन, अनंत चतुर्दशी
(2) दि. 2.9.'20, बुधवार – गुरुहरि पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व
(3) दि. 6.9.'20, रविवार – गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व
(4) दि. 11.9.'20, शुक्रवार – प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामीजी की प्राकट्य तिथि
(5) दि. 12.9.'20, शनिवार – भगवान स्वामिनारायण एवं ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का स्मृति पर्व
(6) दि. 13.9.'20, रविवार – एकादशी–व्रत, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व
(7) दि. 14.9.'20, सोमवार – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी, एवं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्मृति पर्व
(8) दि. 15.9.'20, मंगलवार – अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का स्मृति पर्व
(9) दि. 27.9.'20, रविवार – एकादशी–व्रत
(10) दि. 13.10.'20, मंगलवार – एकादशी–व्रत
(11) दि. 17.10.'20, शनिवार – नवरात्रे प्रारंभ
(12) **दि.25.10.'20, रविवार – दशहरा,** प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(13) दि. 27.10.'20, मंगलवार – एकादशी–व्रत
(14) दि. 28.10.'20, बुधवार – मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामीजी की अंतर्धान तिथि
(15) **दि.31.10.'20, शनिवार – शरदपूर्णिमा,** मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामीजी का प्राकट्य दिन
प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी का भागवती दीक्षा दिन
प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि
(16) दि. 2.11.'20, सोमवार – ब्रह्मस्वरूप जागास्वामीजी की जन्मजयंती
(17) दि. 11.11.'20, बुधवार – एकादशी–व्रत
(18) दि. 12.11.'20, गुरुवार – वाघबारस
(19) दि.13.11.'20, **शुक्रवार – धनतेरस एवं अक्षर चौदस**
(20) **दि.14.11.'20, शनिवार – दिवाली**
(21) **दि.15.11.'20, रविवार – अन्नकूटोत्सव,** नूतन वर्ष–विक्रम संवत 2077 का प्रारंभ
(22) दि.16.11.'20, **सोमवार– भैयादूज**
(23) दि.19.11.'20, गुरुवार – **लाभ पंचमी**
(24) दि. 25.11.'20, बुधवार – प्रबोधिनी एकादशी–व्रत, तुलसी विवाह-प्रारंभ
(25) दि. 30.11.'20, सोमवार – देवदिवाली, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine–Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052